



जसिंता केरकेड़ा की कविताओं में प्रेम का स्वरूप

जितेन्द्र

सुन्दर नगर, रायपुर रोड, बेमेतरा, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Author

जितेन्द्र

E-mail : jitendrasahu1801@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 07/03/2026
Revised on : 08/05/2026
Accepted on : 17/05/2026
Overall Similarity : 00% on 09/05/2026



Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

0%

Overall Similarity

Date: May 9, 2026 (01:52 PM)
Matches: 0 / 2732 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found,
your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code



शोध सार

मनुष्य के जीवन में प्रेम महत्वपूर्ण भावनात्मक अनुभूति है। यह जीवन को सौंदर्य, सुख और आनंद से परिपूर्ण करता है। प्रेम के अनेक रूप होते हैं यह स्त्री-पुरुष के प्रेम से लेकर पारिवारिक संबंधों, प्रकृति, जीव-जंतुओं, राष्ट्र और ईश्वर-प्रेम तक विस्तृत है। जसिंता केरकेड़ा की कविताओं में प्रेम के ये सारे रूप अभिव्यक्त हुए हैं। जसिंता अपनी कविताओं में प्रेम के सौंदर्य और छद्मता दोनों को अभिव्यक्त करती हैं। उनकी कविताओं में प्रेम का उदात्त एवं निश्छल रूप आदिवासी संस्कृति में दिखाई देता है। आदिवासी प्रकृति के उन समस्त जड़ एवं चेतन पदार्थों से प्रेम करते हैं जो जीवन को पोषित और संरक्षित करते हैं। आदिवासी संस्कृति में प्रेम का यह स्वरूप सह-अस्तित्व दर्शन पर आधारित है। जसिंता स्त्री पुरुष के प्रेम को अस्मितामूलक दृष्टिकोण से देखती है जिसमें स्त्री पितृसत्तात्मक व्यवस्था के अनुरूप पुरुष के अधीन या वर्चस्व में दबी नहीं होती है बल्कि उसके समानान्तर साथ-साथ सहायत्री के रूप में चलती हुई दिखाई देती है। जसिंता की कविताओं में प्रेम का यह स्वरूप अधिक सशक्त रूप में व्यक्त हुआ है। प्रेम के सौंदर्य, समानता एवं उदात्त स्वरूप के साथ प्रेम के नाम पर अधिकार भावना के रूप में शोषण, उपेक्षा, कड़वाहट एवं नीरसता को भी वे अपनी कविताओं में व्यक्त है। प्रेम का यह रूप वैवाहिक जीवन में अधिक दिखाई देता है। इस संदर्भ में उन्होंने दाम्पत्य जीवन में प्रेम के अभाव एवं संबंध-निर्वाह की औपचारिकता में घुटती हुई स्त्री का चित्रण किया है। इसके अतिरिक्त उनकी कविताओं में समकालीन राजनीति में व्याप्त देशप्रेम आदि के नाम पर पाखंड और हिंसक क्रिया व्यवहार का चित्रण है। पूँजीवादी व्यवस्था में प्रेम की रिक्तता को भी वह अपनी कविता में अभिव्यक्त करती हैं।

मुख्य शब्द

प्रेम के विविध स्वरूप, प्रकृति प्रेम, आदिवासी संस्कृति, सह-अस्तित्व दर्शन, अस्मितामूलक चेतना, प्रेम का छद्म रूप.

प्रस्तावना

मनुष्य के जीवन में प्रेम महत्वपूर्ण भावनात्मक अनुभूति है। यह जीवन को सौंदर्य, सुख और आनंद से परिपूर्ण करता है। प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में कभी न कभी प्रेम का अनुभव करता है। प्रेम जीवन को विस्तार देता है और व्यक्ति को व्यापक संसार से जोड़ता है। इसके अभाव में जीवन नीरस, उबाऊ और अर्थहीन प्रतीत होता है। प्रेम के अनेक रूप होते हैं यह स्त्री-पुरुष के प्रेम से लेकर पारिवारिक संबंधों, प्रकृति, जीव-जंतुओं, राष्ट्र और ईश्वर-प्रेम तक विस्तृत है। सामान्यतः प्रेम हृदय की गहराइयों से उद्भूत सरल, सहज, उदात्त और समर्पणमय भाव है जो छल-कपट से परे होता है किंतु समकालीन समय में राजनीति और पूँजीवादी प्रभाव के कारण प्रेम का स्वरूप कई बार छद्म और भ्रमित रूप में भी दिखाई देता है। अतः जसिंता केरकेट्टा की कविताओं में प्रेम के सरल-सहज, सौंदर्यपूर्ण रूप के साथ विद्रूप और छद्म रूप भी अभिव्यक्त हुआ है।

जसिंता केरकेट्टा आदिवासी समुदाय से आती हैं जहाँ की संस्कृति सह-अस्तित्व के दर्शन पर आधारित है इसीलिए वहाँ प्रेम एक स्वाभाविक और सहज व्यवहार के रूप में दिखाई देता है जो प्रकृति, पुरखों की स्मृतियों और समस्त जीव-जंतु के प्रति व्यक्त होता है। आदिवासी जीवन प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति पर निर्भर होता है उनका भरण-पोषण और निवास प्रकृति से गहराई से जुड़ा होता है परिणामस्वरूप आदिवासी संस्कृति में प्रकृति के प्रति गहरा जुड़ाव और कृतज्ञता का भाव देखने को मिलता है। जसिंता अपनी कविता 'क्यों महुए तोड़े नहीं जाते पेड़ से?' में इस भाव को अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त करती हैं। जब कवयित्री माँ से पूछती है कि वह महुए को पेड़ से तोड़ने के बजाय गिरने का इंतजार क्यों करती है, तब माँ कहती है- "पेड़ जब गुजर रहा हो/ सारी रात प्रसव पीड़ा से/ बताओ, कैसे डाल हिला दें जोर से?/ बोलो, कैसे तोड़ लें हम/ जबरन महुआ किसी पेड़ से?/ हम सिर्फ इन्तजार करते हैं/ इसलिए कि उनसे प्यार करते हैं।"¹

इन पंक्तियों में पेड़ के प्रति प्रेम के साथ-साथ एक गहरी संवेदनशीलता और वैज्ञानिक चेतना भी निहित है। विभिन्न वैज्ञानिक शोधों से यह स्पष्ट हो गया है भावनाओं को समझता है, वह प्रतिक्रिया करता है, सुख का अनुभव करता है तथा दर्द को अनुभव करता है। आज विज्ञान जिस तथ्य को स्वीकार करता है कि पौधों में भी संवेदनशीलता होती है, उसे आदिवासी समाज सदियों से अपने जीवन में अनुभव करता आया है। आदिवासी आदिम समय से प्रकृति के सानिध्य में रहते हुए प्रकृति की हर क्रिया-प्रतिक्रिया को जानते और उनका सम्मान करते हुए सह-अस्तित्वपूर्ण रूप से जीते आ रहे हैं इसलिए यहाँ माँ महुआ के पेड़ से महुए सीधे तोड़ने के बजाय उसके परिपक्व होकर जमीन में गिरने का इंतजार करती है।

आदिवासी समाज प्रकृति के प्रत्येक तत्व से आत्मीय संबंध रखता है इसलिए वे जंगल या प्रकृति के हर तत्व जैसे पेड़-पौधे, नदी, झरने एवं पहाड़ आदि सभी से प्रेम करते हैं जो उनके जीवन का अभिन्न हिस्से हैं। जसिंता की कविताओं में पहाड़ केवल भौगोलिक संरचना नहीं, बल्कि जीवनदाता और संरक्षक के रूप में उपस्थित है, वे लिखती हैं- "यह जंगल-पहाड़ ही हमारे हक में/ हमारी तरफ सदियों से खड़े हैं/ जिसके लिए हमारे पुरखे दुश्मनों से हर काल में लड़े हैं/ हम भी इनके लिए हर हाल में लड़ेंगे/ यह जीवन भी तो इन्हीं ने दिया है/ इसलिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमने/ इन पहाड़ों से बेइंतहा प्रेम किया है।"²

जंगल-पहाड़ आदि से आदिवासियों ने निस्वार्थ संरक्षण, पोषण, स्वतंत्र जीना और प्रेम करना सीखा है। जंगल-पहाड़ के आश्रय में आदिवासी पोषण के साथ सुरक्षित जीवन जीते रहे हैं। जिस तरह जंगल आदिवासियों को पोषित और संरक्षित करता है उसी तरह आदिवासी भी अलग-अलग समय में जंगलों पर होने वाले हमलों से उनकी रक्षा के लिए खड़े रहे हैं। पूँजीवादी व्यवस्था पूँजी के लिए जंगलों का विनाश करने में लगी है ऐसे समय में आदिवासी जंगल के रूप में अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्षरत दिखाई देते हैं। जंगल-पहाड़ और आदिवासियों के प्रेम-संबंध को पूँजीवादी व्यक्ति कभी नहीं समझ सकता। कवयित्री 'पहाड़ों के लिए' कविता में पूँजीवादी मानसिकता पर कटाक्ष करते हुए कहती हैं- "थोड़े से पैसे के लिए/ जो अपना ईमान बेचते हैं/ वे क्या समझेंगे/ पहाड़ों के लिए कुछ लोग/ क्यों अपनी जान देते हैं।"³

आदिवासी जीवन-दर्शन में प्रकृति और पूर्वजों के प्रति गहरे आत्मीय संबंध का भाव विद्यमान है। वे न केवल जंगल और पहाड़ से प्रेम करते हैं, बल्कि अपने परलोकवासी पूर्वजों से भी उतना ही गहरा लगाव रखते हैं। आदिवासी जीवन-दृष्टि में पूर्वजों के प्रति भी गहरा भावनात्मक संबंध होता है। उनके अनुसार, पूर्वजों की उपस्थिति पेड़ों, पत्तियों और प्रकृति के विभिन्न रूपों में विद्यमान रहती है। उनके लिए जंगल मात्र भौतिक संसाधन नहीं, बल्कि अपने पुरखों की जीवित स्मृति है। जंगल को बसाने, संवारने और संरक्षित करने में उनके पूर्वजों के श्रम, त्याग और खून-पसीने का योगदान रहा है। इसी कारण वर्तमान पीढ़ी के लिए जंगल एक विरासत के रूप में प्राप्त वह सुंदर संसार है, जिसमें उनके पुरखों की उपस्थिति आज भी महसूस की जा सकती है। कविता 'जब पेड़ उखड़ता है' में यह भाव अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त हुआ है, जहाँ पेड़ को दिवंगत माँ और पुरखों की स्मृति के रूप में देखा गया है- "जंगल से गुजरते हुए उसने/ ओक की पत्तियों को चूमा/ जैसे अपनी माँ की हथेलियों को चूमा/ कहा-यह पेड़/ मेरी माँ का हाथ पकड़कर बड़ा हुआ है/ इसके पास आज भी उसका स्पर्श है/

जंगल का हाथ पकड़कर/ मेरे पुरखे भी बड़े हुए/ वे नहीं हैं पर यह आज भी वहीं खड़ा है/ इसने मेरे पुरखों की स्मृतियों/ और स्पर्शों को बचाकर रखा है/ उन्हें महसूस करने के लिए/ मैं इन्हें छूता हूँ, चूमता हूँ/ इनसे प्यार करता हूँ।⁴

जसिंता की कविताओं में प्रेम का एक अन्य आयाम दाम्पत्य जीवन के संदर्भ में उभरता है। विवाह नामक संस्था में जहाँ प्रेम, कर्तव्य और जिम्मेदारी का संबंध स्थापित होता है, वहीं यह कई बार व्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित भी कर देता है। विशेषतः स्त्री के संदर्भ में यह बंधन अधिक जटिल हो जाता है। पहले स्त्रियाँ अपनी दुख-पीड़ा एवं भावनाओं को बिना अभिव्यक्त किए किसी तरह जी लेती थी लेकिन आधुनिक समय में शिक्षा एवं सामाजिक जागरूकता के साथ उसकी चेतना पहले से अधिक विकसित हुई है इसलिए वह अपनी दुख-पीड़ा, स्वप्न एवं भावनाओं को बेझिझक अभिव्यक्त करती है। जसिंता अपनी कविताओं में ऐसे स्त्रियों को चित्रित करती है जो दाम्पत्य जीवन में प्रेम के अभाव एवं बंधन से जूझ रही हैं। उनकी कविता 'सहयात्री' में दाम्पत्य प्रेम की कसक को देखा जा सकता है। 'सहयात्री' कविता में एक पत्नी विवाह के पश्चात अपने और अपने पति के प्रेम-संबंध में आई दूरियों एवं संबंध निर्वाह की औपचारिकता को अभिव्यक्त करते हुए कहती है— "मेरी शादी तमगे की तरह उधर देखो/ दीवार की खूँटी पर टंगी है कई सालों से/ और तुम उस तमगे के पीछे से कभी-कभी/ निकल आते हो किसी अतिथि की तरह/ मैं समझती थी कभी/ प्रेम में 'मैं' तुम हो गई हूँ और तुम 'मैं' / पर एक सुबह उठकर तुम्हारा 'मैं' / अपने रास्ते चला गया/ और मेरा 'मैं' अकेला इधर ही कहीं तड़पता हुआ छूट गया/ 'हम' न हो सकने की कसक में"⁵

इसी प्रकार 'अगर वे साथी भर होते' कविता में स्त्री की दबी हुई पीड़ा सामने आती है। इस कविता में कवयित्री की माँ के दाम्पत्य जीवन का दुख उस समय व्यक्त होता है जब वह अपने बेटी के प्रेमी द्वारा उसके प्रति किए गये केयर की बातों को सुनती है— तुम्हारे पिता भी साथी-भर होते/ तो मेरा जीवन कुछ और होता/ गहरी साँस खींचकर(माँ) इतना-भर कहती हैं।⁶

इन दोनों कविता में आई स्त्रियाँ कहीं न कहीं पारंपरिक रुढ़िगत संस्कारों से संस्कारित हैं इसलिए वे प्रेम के अभाव के बावजूद दाम्पत्य संबंध के बोझ को ढो रही हैं लेकिन आधुनिक समय की स्त्री अपनी अस्मिता को बनाए रखते हुए प्रेम करती हुई नज़र आती है। स्वयं कवयित्री प्रेम को सहयात्री के रूप में अनुभूत करती है। वह प्रेम के उस नैरेशन को प्रश्नांकित करती है जिसमें दो लोगों के गहरे सामीप्य को दो जिस्म एक जान के रूप में नैरेट किया जाता है। वह कहती है— "प्रेम में आदमी/ क्यों एक हो जाना चाहता है?/ अपनी भिन्नता के साथ/ क्यों दो नहीं रह पाता है?/ इस एक की चाहत में वह/ प्रेम को हथियार में बदलता है/ और जीवन-भर/ अपने साथी पर हमला करता है/ प्रेम कहाँ उसकी ताकत बन पाता है?"⁷

जसिंता की कविताओं में प्रेम का द्वैत रूप देखने को मिलता है जिसमें प्रेमी युगल अपने स्वतंत्र अस्मिता के साथ एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। प्रेम का यह आधुनिक रूप स्त्रीवादी चेतना और अस्मितामूलक दृष्टिकोण के कारण विकसित होता है। प्रेम के इस स्वरूप में प्रेमी युगल अपनी स्वतंत्र अस्मिता के साथ एक-दूसरे के संग समानान्तर रूप से प्रेम के मार्ग पर चलते हुए दिखाई देते हैं— "हम प्रेम में हमेशा दो बने रहे/ धीरे-धीरे जाना और हर बार/ एक-दूसरे को अद्भुत पाया/ एक-दूसरे की ताकत को सराहा/ कमियों को रास्ता दिखाया/ हमारे रास्ते अलग रहे पर हम साथ चले/ कभी-कभी लगता है/ वह मुझे, मुझसे ज्यादा जानता है/ मैं खुद को ठीक से जानने के लिए/ उस तक जाती हूँ और वह/ खुद को जानने के लिए मुझ तक आता है।"⁸

अस्मितामूलक चेतना एवं द्वैत के दृष्टिकोण ने जहाँ व्यक्तिगत प्रेम को एकात्म के घुटन भरे बंधन से मुक्त करने का प्रयास किया है। वहीं समकालीन राजनीति देशप्रेम, संस्कृतिप्रेम एवं ईश्वर प्रेम के नाम पर धार्मिक-सांस्कृतिक विविधताओं से भरे इस देश को एक करने की चाह में हिंसा का रूप अख्तियार करती हुई दिखाई देती है— "इधर देश के प्रेम में कुछ लोग/ सबको शकश् कर देना चाहते हैं/ जो "एक" न हो पाए, वे मारे जाते हैं/ प्रेम के नाम पर/ सबको एक करने की चाहत में/ वे मनुष्य भी नहीं रह पाते हैं।"⁹

इसी तरह 'जब वह प्यार करता है' कविता में प्रेम के नाम पर राजनीति के पाखंड और हिंसक रूप को उजागर किया गया है। झूठे राजनेताओं के लिए प्रेम भावनात्मक के बजाय एक साधन है जिसे वह अपने वर्चस्व को बनाये रखने और सत्ता के विस्तार के लिए प्रयोग करते हैं। जसिंता अपनी कविता 'जब वह प्यार करता है' में राजनेताओं के छद्मपूर्ण और पाखंडपूर्ण प्रेम को अभिव्यक्त करते हुई कहती हैं— जिसने कहा स्त्री से प्रेम है/ वह मारी गई/ कहा बच्चियाँ सुरक्षित होनी चाहिए/ वे तेजी से बलात्कार की शिकार हुई/ कहा नदियाँ साफ होंगी/ वे और गन्दी कर दी गई/ कहा पेड़ बचाए जाएँगे/ जंगल लकड़हारों को सौंप दिए गए/ कहा प्रकृति से प्रेम है/ वह और विकृत कर दी गई/ और वह खुद क्या करता रहा?/ हत्यारों के साथ मिलकर हँसता रहा।"¹⁰

पूँजीवादी भूमंडलीय सभ्यता ने मनुष्य के सामाजिक व्यवस्था, संस्कृति, मूल्य, प्रकृति के साथ उसके भावनात्मक पक्ष

को भी क्षरित एवं परिवर्तित किया है। इस सभ्यता के उपभोक्तावादी संस्कृति में मनुष्य भौतिक साधनाओं को जुटाने में लगा हुआ अपने संवेदनात्मक पक्ष से इस कदर रिक्त होते जाता है कि वह यह अहसास खो देता है कि वह किससे प्रेम करता है। पूँजी और भौतिक साधनों को जुटाने में वह निरन्तर प्रकृति, मनुष्य एवं संबंधों पर हमला करता गया है उसके नैसर्गिक स्वरूप को बिगाड़ता चला गया है। इस भूमंडलीय व्यवस्था का मनुष्य भौतिक सुख-साधनों को जुटाने के बावजूद खुश नहीं होता है क्योंकि उसके जीवन में प्रेम का अभाव है क्योंकि उसने यह साधन विनाश, शोषण एवं हिंसा के रास्ते पर चलकर जुटाया है। मनुष्य की इस दशा का वर्णन करती हुई जसिंता कहती हैं— “आदमी बाँधता है नदी, गिराता है पेड़ / काटता है आदमी / बोता है ज़हर / उखाड़ता है साँसें / बिगाड़ता है चेहरा मौसम का / फिर अपने खुर तले / करता है पूरी धरती की दौरी / और यही दुहराता है बार-बार / फिर किस चीज़ से वह करता है प्यार?”¹¹

जसिंता की कविता की भाषा आम बोलचाल की भाषा के अधिक निकट है, उनकी भाषा सहज, सरल और बोधगम्य है। वह उन समकालीन हिन्दी कवियों में से एक हैं जो सपाटबयानी को सफलतापूर्वक साध पाती है अर्थात् वे आम जन भाषा में भी गूढ़ और गंभीर विषय को सरलता से कहने में सक्षम हैं। उनकी इस भाषायी क्षमता के कारण उनकी कविता बहुत कम समय में बहुत तेजी से प्रचारित और प्रसारित हुई है। अधिक जीवंत और प्रभावशाली ढंग से पाठकों तक पहुँचते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं जसिंता के काव्य में प्रेम के बहुआयामी स्वरूप अभिव्यक्त हुए हैं। उनकी कविताओं में प्रेम केवल दाम्पत्य या स्त्री-पुरुष संबंधों तक सीमित न होकर प्रकृति, पूर्वजों, समुदाय, अस्मिता और मानवीय सह-अस्तित्व से जुड़ा व्यापक जीवन-दर्शन बनकर उभरता है। आदिवासी सांस्कृतिक चेतना से निर्मित उनकी काव्य-दृष्टि में प्रेम सहज, समर्पित, संवेदनशील और प्रकृति-केंद्रित भाव के रूप में उपस्थित है। ‘क्यों महुए तोड़े नहीं जाते पेड़ से?’, ‘पहाड़ों के लिए’ तथा ‘जब पेड़ उखड़ता है’ जैसी यह कविताएँ बताती हैं कि आदिवासी समाज प्रकृति को मात्र संसाधन नहीं, बल्कि जीवंत सहचर, संरक्षक और पुरखों की स्मृतियों के रूप में देखता है। जंगल, पहाड़, नदी और पेड़ों के प्रति यह आत्मीय संबंध सह-अस्तित्व और पर्यावरणीय चेतना का सशक्त उदाहरण है। जसिंता अपनी कविताओं में समकालीन पूँजीवादी व्यवस्था, राजनीतिक छद्म और उपभोक्तावादी संस्कृति द्वारा प्रेम के पाखंड रूपों को भी उजागर करती हैं। उनकी कविताओं में प्रेम के नाम पर होने वाली हिंसा, शोषण, सत्ता-लोलुपता और प्रकृति-विनाश के अंतर्विरोधों को तीव्र आलोचनात्मक दृष्टि से देखा गया है। ‘जब वह प्यार करता है’ जैसी कविता प्रेम की आड़ में संचालित राजनीतिक पाखंड को उद्घाटित करती है। दाम्पत्य संबंधों के संदर्भ में कवयित्री स्त्री की भावनात्मक उपेक्षा, अकेलेपन और संबंधों की औपचारिकता को रेखांकित करती हैं, वहीं आधुनिक स्त्री चेतना के आधार पर प्रेम को समानता, स्वतंत्र अस्मिता और सहयात्रा के रूप में पुनर्परिभाषित करती हैं। इस प्रकार जसिंता केरकेट्टा की कविताएँ प्रेम को संवेदना, प्रतिरोध, अस्मिता और मानवीय मुक्ति के व्यापक विमर्श रूपांतरित करती हैं। उनकी सरल, सहज और जनभाषा से निकट काव्यभाषा इन भावों को अत्यंत प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त करती है।

संदर्भ सूची

1. केरकेट्टा, जसिंता (2023) *ईश्वर और बाज़ार*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 141।
2. केरकेट्टा, जसिंता (2023) *ईश्वर और बाज़ार*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 170।
3. केरकेट्टा, जसिंता (2023) *ईश्वर और बाज़ार*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 181।
4. केरकेट्टा, जसिंता (2024) *प्रेम में पेड़ होना*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 37।
5. केरकेट्टा, जसिंता (2023) *ईश्वर और बाज़ार*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 136।
6. केरकेट्टा, जसिंता (2024) *प्रेम में पेड़ होना*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 26।
7. केरकेट्टा, जसिंता (2024) *प्रेम में पेड़ होना*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 17।
8. केरकेट्टा, जसिंता (2024) *प्रेम में पेड़ होना*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 18।
9. केरकेट्टा, जसिंता (2024) *प्रेम में पेड़ होना*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 17।
10. केरकेट्टा, जसिंता (2023) *ईश्वर और बाज़ार*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 54।
11. केरकेट्टा, जसिंता (2023) *ईश्वर और बाज़ार*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 80।
